Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2026 = 8.727
https://www.srjis.com/issues_data/293
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2026, Vol- 15/95

जनसंख्या शिक्षा और सतत विकास : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य

डॉ0 सुशील कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड्. विभाग स्वामी देवानन्द पी.जी. कालेज, मठ–लार देवरिया

Paper Received On: 20 MAY 2026
Peer Reviewed On: 24 JUNE 2026
Published On: 01 JULY 2026

Abstract

इक्कीसवीं शताब्दी में जनसंख्या वृद्धि, संसाधनों का असमान वितरण, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक असमानताएँ वैश्विक स्तर पर प्रमुख चिंताओं के रूप में उभरी हैं। इन परिस्थितियों में जनसंख्या शिक्षा केवल जनसंख्या नियंत्रण का माध्यम न होकर एक व्यापक शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुई है, जो व्यक्तियों को परिवार, समाज, पर्यावरण तथा विकास के मध्य विद्यमान अंतर्संबंधों को समझने की क्षमता प्रदान करती है। जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, उत्तरदायी नागरिकता का विकास करना तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु व्यवहारगत परिवर्तन को प्रोत्साहित करना है। सतत विकास की अवधारणा वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करने पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिपादित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण तथा जलवायु कार्रवाई जैसे विविध आयामों को समाहित करते हैं। जनसंख्या शिक्षा इन लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से योगदान प्रदान करती है, क्योंकि यह संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, छोटे एवं सुदृढ़ परिवार की अवधारणा, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास के वैचारिक, सामाजिक तथा नीतिगत आयामों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में भारतीय परिप्रेक्ष्य को विशेष रूप से केंद्रित करते हुए यह विवेचना की गई है कि किस प्रकार जनसंख्या शिक्षा सतत विकास के लिए आधारभूमि तैयार कर सकती है। साथ ही, वर्तमान चुनौतियों, संस्थागत सीमाओं तथा भविष्य की संभावनाओं का सम्यक् परीक्षण भी किया गया है। अध्ययन से यह प्रतिपादित होता है कि जनसंख्या शिक्षा को औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के साथ समेकित कर सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : *जनसंख्या शिक्षा, सतत विकास, सतत विकास लक्ष्य, जनसांख्यिकी, पर्यावरणीय संतुलन, लैंगिक समानता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, सामाजिक विकास, संसाधन प्रबंधन।*

प्रस्तावना–

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास जनसंख्या और संसाधनों के पारस्परिक संबंधों से गहराई से जुड़ा रहा है। किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या उसके लिए एक महत्वपूर्ण परिसंपत्ति मानी जाती है, किंतु जब जनसंख्या वृद्धि उपलब्ध संसाधनों, अवसंरचनात्मक सुविधाओं तथा संस्थागत व्यवस्थाओं पर अत्यधिक दबाव उत्पन्न करने लगती है, तब यह विकास की गति को प्रभावित करने लगती है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) के अनुसार विश्व की जनसंख्या वर्ष 2022 में आठ अरब से अधिक हो चुकी है, जबकि भारत ने वर्ष 2023 में विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में चीन को पीछे छोड़ दिया। यह परिवर्तन केवल सांख्यिकीय महत्व का विषय नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक निहितार्थ भी अत्यंत व्यापक हैं। विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास, पेयजल, ऊर्जा तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। शहरीकरण के विस्तार, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तथा उपभोग की बढ़ती प्रवृत्तियों ने विकास और संरक्षण के मध्य संतुलन की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। विशेष रूप से भारत जैसे देश में, जहाँ सामाजिक विविधता एवं क्षेत्रीय असमानताएँ विद्यमान हैं, वहाँ जनसंख्या से संबंधित प्रश्नों को केवल संख्यात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। इसके लिए व्यवहार, मूल्य, जागरूकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के स्तर पर हस्तक्षेप अपेक्षित है। इसी संदर्भ में जनसंख्या शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों को यह समझने में सहायता प्रदान करती है कि परिवार का आकार, स्वास्थ्य संबंधी निर्णय, लैंगिक दृष्टिकोण तथा संसाधनों के उपयोग से संबंधित व्यक्तिगत विकल्प व्यापक सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह शिक्षा व्यक्ति को केवल जानकारी प्रदान नहीं करती, बल्कि उसे विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए भी सक्षम बनाती है। परिणामस्वरूप, समाज में उत्तरदायित्व, सहभागिता तथा दीर्घकालिक सोच का विकास संभव हो पाता है।

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दूसरी ओर, सतत विकास की अवधारणा ने वैश्विक विकास विमर्श को एक नई दिशा प्रदान की है। ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट Our Common Future (1987) ने इस विचार को स्थापित किया कि विकास तभी सार्थक है, जब वह भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को प्रभावित किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। इसके उपरांत संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्यों ने विकास को बहुआयामी दृष्टिकोण से परिभाषित किया। इन लक्ष्यों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य, स्वच्छ जल, जलवायु कार्रवाई तथा असमानताओं में कमी जैसे आयाम सम्मिलित हैं। जनसंख्या शिक्षा और सतत विकास के मध्य संबंध स्वाभाविक एवं बहुस्तरीय है। जनसंख्या की प्रकृति एवं संरचना का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से संसाधनों की उपलब्धता, उत्पादन प्रणाली, सामाजिक संस्थाओं तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर पड़ता है। इसी प्रकार, सतत विकास की सफलता भी इस बात पर निर्भर करती है कि समाज के सदस्य जनसंख्या, पर्यावरण और विकास के बीच स्थापित संबंधों को किस सीमा तक समझते हैं। इस कारण जनसंख्या शिक्षा को सतत विकास की आधारभूत पूर्वशर्त के रूप में देखा जाने लगा है। भारतीय नीति–निर्माण के स्तर पर भी शिक्षा एवं सतत विकास के मध्य संबंधों को निरंतर महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र शिक्षा, जीवन कौशल, पर्यावरणीय चेतना तथा संवैधानिक मूल्यों पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा विभिन्न जन–जागरूकता अभियानों ने जनसंख्या संबंधी मुद्दों को सामाजिक विकास के साथ जोड़ने का प्रयास किया है।

जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा–

जनसंख्या शिक्षा एक बहुआयामी शैक्षिक अवधारणा है, जिसका संबंध केवल जनसंख्या की संख्या या वृद्धि दर के अध्ययन तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति, परिवार, समुदाय तथा राष्ट्र के स्तर पर जनसंख्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं– जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवासन, परिवार का आकार, स्वास्थ्य, लैंगिक संबंध, संसाधनों का उपयोग एवं जीवन की गुणवत्ता के प्रति जागरूकता विकसित करने की एक सतत प्रक्रिया है। इसका मूल उद्देश्य व्यक्तियों को जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के प्रभावों को समझने तथा उनसे संबंधित निर्णयों में विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने के लिए सक्षम बनाना है। जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा का व्यवस्थित विकास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, जब अनेक देशों ने तीव्र जनसंख्या वृद्धि के सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों का अनुभव किया। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) ने जनसंख्या शिक्षा को ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जो शिक्षार्थियों में जनसंख्या संबंधी तथ्यों, समस्याओं एवं उनके समाधान के प्रति ज्ञान, अभिवृत्ति और कौशल का विकास करती है। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि जनसंख्या शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना का संप्रेषण नहीं, बल्कि व्यवहारगत परिवर्तन की दिशा में अनुकूल वातावरण निर्मित करना भी है। जनसंख्या शिक्षा का एक प्रमुख आयाम परिवार एवं समाज के मध्य संबंधों की समझ विकसित करना है। परिवार का आकार, बच्चों की संख्या, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य तथा महिलाओं की शिक्षा जैसे तत्व न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि इनका प्रभाव व्यापक सामाजिक संरचना पर भी पड़ता है। जब व्यक्ति इन संबंधों को समझता है, तब वह अपने निर्णयों को दीर्घकालिक परिणामों के संदर्भ में देखने लगता है। इस दृष्टि से जनसंख्या शिक्षा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त, जनसंख्या शिक्षा स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। किशोरावस्था शिक्षा, प्रजनन स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता एवं परिवार कल्याण से संबंधित विषय इसके महत्वपूर्ण घटक हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहाँ स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच एक चुनौती बनी हुई है, वहाँ जनसंख्या शिक्षा नागरिकों को आवश्यक जानकारी प्रदान कर स्वास्थ्य–संबंधी जोखिमों को कम करने में सहायक बनती है। इस प्रकार यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के संवर्धन में अप्रत्यक्ष योगदान प्रदान करती है। लैंगिक समानता का प्रश्न भी जनसंख्या शिक्षा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। अनेक समाजों में पुत्र वरीयता, बाल विवाह तथा महिलाओं की सीमित शैक्षिक भागीदारी जैसी प्रवृत्तियाँ जनसंख्या संरचना को प्रभावित करती हैं। जनसंख्या शिक्षा इन प्रवृत्तियों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हुए समान अवसर, सम्मान एवं सहभागिता के मूल्यों को प्रोत्साहित करती है। फलस्वरूप, यह सामाजिक न्याय एवं समावेशन की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समकालीन संदर्भ में जनसंख्या शिक्षा को पर्यावरणीय चेतना के साथ भी जोड़ा जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या का प्रभाव भूमि, जल, वन एवं ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता है। यदि संसाधनों की उपलब्धता एवं उपभोग के मध्य संतुलन स्थापित नहीं किया जाता, तो पर्यावरणीय संकट और अधिक गहरा सकता है। जनसंख्या शिक्षा इस संबंध को स्पष्ट करते हुए व्यक्तियों को संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति प्रेरित करती है। इससे संरक्षण एवं विकास के मध्य संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में जनसंख्या शिक्षा को समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों के माध्यम से समाहित करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने विद्यालयी शिक्षा में जनसंख्या संबंधी विषयों को शामिल कर विद्यार्थियों में जनसांख्यिकीय जागरूकता विकसित करने की दिशा में कार्य किया है। इसके अतिरिक्त, उच्च शिक्षा संस्थानों में भी जनसंख्या अध्ययन एवं विकास अध्ययन के अंतर्गत इस विषय का विस्तार हुआ है। इसके

बावजूद, जनसंख्या शिक्षा को अभी भी एक पृथक एवं समेकित अध्ययन क्षेत्र के रूप में व्यापक स्वीकृति प्राप्त होना शेष है।

सतत विकास की अवधारणा–

सतत विकास समकालीन वैश्विक विमर्श की एक केंद्रीय अवधारणा है, जिसने विकास के पारंपरिक प्रतिमानों को पुनर्परिभाषित किया है। यह विचार इस आधार पर विकसित हुआ कि आर्थिक प्रगति, सामाजिक कल्याण एवं पर्यावरणीय संरक्षण को एक–दूसरे से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। यदि विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन, सामाजिक असमानताओं अथवा पर्यावरणीय क्षरण को बढ़ावा देती है, तो उसकी दीर्घकालिक उपयोगिता संदिग्ध हो जाती है। इसी कारण सतत विकास को संतुलित एवं उत्तरदायी विकास की संकल्पना के रूप में स्वीकार किया गया है। सतत विकास की अवधारणा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मान्यता वर्ष 1987 में विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की रिपोर्ट Our Common Future के माध्यम से प्राप्त हुई। इस रिपोर्ट में सतत विकास को ऐसी विकास प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करे कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की संभावनाएँ प्रभावित न हों। इस परिभाषा ने विकास के विमर्श में समय, संसाधन एवं उत्तरदायित्व के तत्वों को केंद्रीय स्थान प्रदान किया। सतत विकास के तीन प्रमुख आयाम माने जाते हैं– आर्थिक स्थिरता, सामाजिक समावेशन तथा पर्यावरणीय संरक्षण। आर्थिक स्थिरता का संबंध ऐसे विकास मॉडल से है, जो उत्पादन, रोजगार एवं आय के अवसरों को बढ़ावा दे। सामाजिक समावेशन का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को विकास प्रक्रिया में समान भागीदारी सुनिश्चित करना है, जबकि पर्यावरणीय संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने पर बल देता है। इन तीनों आयामों के मध्य समन्वय ही सतत विकास की वास्तविक आधारशिला है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में कमी, जल संकट तथा ऊर्जा असुरक्षा जैसी चुनौतियों ने सतत विकास की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। औद्योगीकरण एवं उपभोक्तावाद के विस्तार ने जहाँ जीवन स्तर में सुधार किया है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय दबावों में भी वृद्धि की है। इस स्थिति ने नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों को विकास की वैकल्पिक एवं दीर्घकालिक रणनीतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में स्वीकृत "एजेंडा 2030" सतत विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। इसके अंतर्गत निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य वैश्विक समुदाय के लिए एक साझा कार्य–योजना प्रस्तुत करते हैं। इनमें गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल एवं स्वच्छता, किफायती एवं स्वच्छ ऊर्जा, असमानताओं में कमी तथा जलवायु कार्रवाई जैसे लक्ष्य सम्मिलित हैं। इन लक्ष्यों की विशेषता यह है कि वे विकास को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि मानव–केंद्रित एवं समावेशी दृष्टिकोण से देखते हैं। भारत ने भी सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को विभिन्न नीतिगत पहलों के माध्यम से व्यक्त किया है। नीति आयोग को सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन एवं निगरानी की जिम्मेदारी प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे प्रयास सतत विकास के विभिन्न आयामों को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन पहलों ने विकास को स्थानीय आवश्यकताओं एवं वैश्विक दायित्वों के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। सतत विकास की अवधारणा का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित है। केवल सरकारी नीतियाँ एवं कार्यक्रम ही इसके उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकते, बल्कि इसके लिए समाज के प्रत्येक सदस्य की सहभागिता आवश्यक है। शिक्षा, जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से ही सतत विकास को व्यवहारिक रूप प्रदान किया जा सकता है।

जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास का अंतर्संबंध–

जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास के मध्य संबंध बहुआयामी, परस्पर–निर्भर तथा दीर्घकालिक प्रभावों से युक्त है। दोनों अवधारणाएँ मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार, संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्थापना पर बल देती हैं। जहाँ जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों को जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं एवं उनके प्रभावों के प्रति संवेदनशील बनाती है, वहीं सतत विकास इन प्रक्रियाओं के संदर्भ में संतुलित एवं न्यायपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार, जनसंख्या शिक्षा को सतत विकास के लिए आवश्यक वैचारिक एवं व्यवहारिक आधार के रूप में देखा जा सकता है। जनसंख्या की संरचना एवं वृद्धि का प्रभाव किसी भी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। यदि जनसंख्या वृद्धि की गति संसाधनों की उपलब्धता से अधिक हो जाती है, तो शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं रोजगार जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति चुनौतीपूर्ण हो जाती है। इसके विपरीत, यदि नागरिक जनसंख्या संबंधी प्रश्नों के प्रति जागरूक हों और अपने निर्णयों में दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाएँ, तो विकास की प्रक्रिया अधिक संतुलित एवं प्रभावी बन सकती है। जनसंख्या शिक्षा इसी प्रकार की चेतना का विकास करती है, जो सतत विकास की आधारभूत अपेक्षाओं के अनुरूप है।

- सतत विकास लक्ष्य–3 (उत्तम स्वास्थ्य एवं कल्याण) के संदर्भ में जनसंख्या शिक्षा की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से प्रजनन स्वास्थ्य, मातृ एवं शिशु कल्याण, पोषण तथा स्वच्छता से संबंधित ज्ञान का प्रसार होता है। जब व्यक्ति स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं, तब स्वास्थ्य सेवाओं पर अनावश्यक दबाव कम होता है तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार की संभावनाएँ बढ़ती हैं। परिणामस्वरूप, स्वस्थ एवं उत्पादक मानव संसाधन का निर्माण संभव हो पाता है।
- सतत विकास लक्ष्य–4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और जनसंख्या शिक्षा के मध्य भी घनिष्ठ संबंध विद्यमान है। शिक्षा स्वयं सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जबकि जनसंख्या शिक्षा शिक्षा के क्षेत्र को जीवनोपयोगी एवं संदर्भपरक बनाती है। विद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थान यदि जनसंख्या, पर्यावरण एवं विकास से संबंधित विषयों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाते हैं, तो विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, उत्तरदायित्व एवं नागरिक चेतना का विकास संभव होता है। इस प्रकार, जनसंख्या शिक्षा शिक्षण की गुणवत्ता एवं उसकी सामाजिक उपयोगिता दोनों को सुदृढ़ करती है।
- लैंगिक समानता के संदर्भ में भी दोनों अवधारणाओं के मध्य स्पष्ट संबंध स्थापित किया जा सकता है। सतत विकास लक्ष्य–5 महिलाओं एवं पुरुषों के लिए समान अवसरों की स्थापना पर बल देता है। जनसंख्या शिक्षा बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव, पुत्र वरीयता तथा महिलाओं की सीमित निर्णयात्मक भूमिका जैसी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती है। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होती है, जो समावेशी विकास की दिशा में एक आवश्यक कदम है।
- पर्यावरणीय दृष्टि से भी जनसंख्या शिक्षा और सतत विकास एक–दूसरे के पूरक हैं। बढ़ती जनसंख्या का प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग, अपशिष्ट उत्पादन एवं पारिस्थितिक संतुलन पर पड़ता है। यदि समाज संसाधनों की सीमाओं को समझे बिना उनका उपयोग करता है, तो पर्यावरणीय संकट और अधिक गहरा सकता है। जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों को यह समझने में सहायता प्रदान करती है कि उनके दैनिक व्यवहार जैसे– जल का उपयोग, ऊर्जा की खपत तथा उपभोग की प्रवृत्तियाँ दीर्घकालिक पर्यावरणीय परिणामों से जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार, यह पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करती है।
- जनसंख्या शिक्षा और सतत विकास के संबंध का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक पूँजी का निर्माण भी है। जब समाज के सदस्य सूचित एवं उत्तरदायी निर्णय लेने में सक्षम होते हैं, तब सामुदायिक सहयोग, लोकतांत्रिक सहभागिता एवं सामाजिक विश्वास में वृद्धि होती है। ये सभी तत्व सतत विकास की सफलता के लिए आवश्यक माने जाते हैं। अतः जनसंख्या शिक्षा केवल व्यक्तिगत स्तर पर परिवर्तन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संस्थाओं को भी अधिक उत्तरदायी एवं संवेदनशील बनाने में योगदान देती है।
- तकनीकी प्रगति एवं वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में जनसंख्या संबंधी चुनौतियों का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। आंतरिक एवं अंतरराष्ट्रीय प्रवासन, शहरीकरण, वृद्ध होती जनसंख्या तथा श्रम बाजार में हो रहे परिवर्तन नई परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहे हैं। इन परिवर्तनों को समझने एवं उनके अनुरूप नीतियाँ विकसित करने के लिए जनसंख्या शिक्षा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। इसके माध्यम से नागरिकों में ऐसी अनुकूलन क्षमता विकसित की जा सकती है, जो सतत एवं समावेशी विकास को गति प्रदान करे।

अतः यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास के मध्य संबंध केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक एवं नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों की संयुक्त उपस्थिति ही ऐसे समाज के निर्माण में सहायक हो सकती है, जो संसाधनों के प्रति उत्तरदायी, सामाजिक दृष्टि से समावेशी तथा पर्यावरणीय रूप से संतुलित हो।

भारतीय परिप्रेक्ष्य : नीतियाँ एवं वर्तमान स्थिति–

भारत विश्व के उन देशों में सम्मिलित है, जहाँ जनसंख्या, विकास एवं संसाधनों के मध्य संबंध अत्यंत जटिल एवं व्यापक स्वरूप में दिखाई देते हैं। विशाल जनसंख्या, क्षेत्रीय विविधता, सामाजिक विषमताएँ तथा आर्थिक असमानताएँ भारतीय संदर्भ को विशिष्ट बनाती हैं। इसी कारण जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास से संबंधित नीतियों का महत्व यहाँ अन्य देशों की तुलना में अधिक व्यापक हो जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने जनसंख्या एवं विकास से जुड़े प्रश्नों को विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से संबोधित करने का प्रयास किया है। भारत विश्व का पहला देश था, जिसने वर्ष 1952 में राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि की दर को नियंत्रित करना एवं नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करना था। समय के साथ इस कार्यक्रम का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ और इसमें मातृ स्वास्थ्य, प्रजनन अधिकार, परिवार कल्याण तथा सामुदायिक सहभागिता जैसे आयामों को शामिल किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय नीति–निर्माण में जनसंख्या संबंधी प्रश्नों को व्यापक सामाजिक

विकास के साथ जोड़कर देखा गया है। जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने विभिन्न स्तरों पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विद्यालयी पाठ्यक्रमों में स्वास्थ्य, पर्यावरण, परिवार जीवन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित विषयों को समाहित किया गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में जनसंख्या अध्ययन, विकास अध्ययन एवं पर्यावरण अध्ययन जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को समकालीन जनसांख्यिकीय प्रश्नों से परिचित कराया जा रहा है। यद्यपि इन प्रयासों ने जागरूकता के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, तथापि जनसंख्या शिक्षा का एकीकृत एवं व्यवस्थित स्वरूप अभी भी सीमित दिखाई देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक एवं जीवन–कौशल आधारित बनाने पर बल दिया है। नीति में पर्यावरणीय जागरूकता, संवैधानिक मूल्यों, स्वास्थ्य एवं नैतिक उत्तरदायित्व जैसे तत्वों को विशेष महत्व दिया गया है। यद्यपि "जनसंख्या शिक्षा" शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख सीमित है, तथापि नीति के अनेक प्रावधान इसके मूल उद्देश्यों के अनुरूप हैं। इससे भविष्य में जनसंख्या शिक्षा को औपचारिक शिक्षा के साथ अधिक प्रभावी रूप से जोड़ने की संभावनाएँ दिखाई देती हैं।

सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। नीति आयोग द्वारा प्रकाशित सतत विकास लक्ष्य सूचकांक राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के प्रदर्शन का नियमित मूल्यांकन करता है। स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन तथा बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक समावेशन के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इन कार्यक्रमों का प्रभाव सतत विकास के विभिन्न आयामों पर देखा जा सकता है। इसके बावजूद, भारत के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संबंधी असमानताएँ अभी भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। किशोर स्वास्थ्य, पोषण, महिला सशक्तिकरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण से संबंधित प्रश्न अनेक राज्यों में गंभीर चिंता का विषय बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त, तीव्र शहरीकरण एवं आंतरिक प्रवासन ने अवसंरचनात्मक दबावों को भी बढ़ाया है। इन परिस्थितियों में जनसंख्या शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह नागरिकों में जागरूकता एवं उत्तरदायित्व का विकास करने की क्षमता रखती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS–5) के आँकड़े संकेत करते हैं कि देश में कुल प्रजनन दर में कमी आई है तथा महिला शिक्षा एवं संस्थागत प्रसव में वृद्धि हुई है। दूसरी ओर, कुछ क्षेत्रों में बाल कुपोषण एवं किशोर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। यह स्थिति इंगित करती है कि जनसंख्या से संबंधित प्रश्नों का समाधान केवल नीतिगत घोषणाओं के माध्यम से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए शिक्षा एवं सामुदायिक सहभागिता को भी समान महत्व देना आवश्यक है।

प्रमुख चुनौतियाँ–

जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के बावजूद अनेक संरचनात्मक, सामाजिक एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ न केवल नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन को प्रभावित करती हैं, बल्कि जनसंख्या शिक्षा के अपेक्षित परिणामों को भी सीमित कर देती हैं। अतः इन अवरोधों की समुचित पहचान एवं विश्लेषण आवश्यक है। इसकी प्रमुख चुनौतियां स्पश्ट की गयी हैं–

- प्रथम, जनसंख्या शिक्षा को अभी तक शिक्षा प्रणाली में एक समेकित एवं स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में पर्याप्त स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में इसके विभिन्न घटक बिखरे हुए रूप में उपस्थित हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों में इस विषय के प्रति समग्र समझ विकसित नहीं हो पाती। पाठ्यचर्या में इसकी सीमित उपस्थिति इसके प्रभाव क्षेत्र को संकुचित कर देती है।
- द्वितीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ अनेक क्षेत्रों में जनसंख्या संबंधी व्यवहार को प्रभावित करती हैं। बाल विवाह, पुत्र वरीयता, लैंगिक असमानता तथा परिवार के आकार से संबंधित पारंपरिक धारणाएँ अभी भी समाज के विभिन्न वर्गों में विद्यमान हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल औपचारिक शिक्षा पर्याप्त सिद्ध नहीं होती, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन भी आवश्यक हो जाता है।
- तृतीय, क्षेत्रीय असमानताएँ जनसंख्या शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करती हैं। देश के विभिन्न राज्यों एवं जिलों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संचार सुविधाओं की उपलब्धता में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। परिणामस्वरूप, जनसंख्या शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों का प्रभाव सभी क्षेत्रों में समान रूप से परिलक्षित नहीं होता। विशेष रूप से दूरस्थ एवं वंचित समुदायों तक इन कार्यक्रमों की पहुँच अभी भी सीमित है।
- चतुर्थ, प्रशिक्षित मानव संसाधनों की कमी भी एक गंभीर समस्या है। अनेक शैक्षणिक संस्थानों में ऐसे शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों का अभाव है, जो जनसंख्या, स्वास्थ्य एवं सतत विकास से संबंधित विषयों को अंतर्विषयक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर सकें। इससे शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा विद्यार्थियों को विषय की व्यवहारिक उपयोगिता का पर्याप्त बोध नहीं हो पाता।

- पंचम, तकनीकी एवं डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच जन–जागरूकता के प्रयासों को प्रभावित करती है। डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा के प्रसार के नए अवसर प्रदान किए हैं, किंतु डिजिटल विभाजन के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग इन सुविधाओं से पूर्णतः लाभान्वित नहीं हो पा रहा है। यह स्थिति विशेष रूप से ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में अधिक स्पष्ट दिखाई देती है।
- षष्ठम, पर्यावरणीय संकटों की तीव्रता ने जनसंख्या एवं विकास के प्रश्नों को और अधिक जटिल बना दिया है। जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जैव विविधता में कमी तथा प्रदूषण जैसी समस्याएँ जनसंख्या दबाव के साथ मिलकर बहुआयामी चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं। इन परिस्थितियों में विकास एवं संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना नीति–निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण दायित्व बन गया है।

अंततः, विभिन्न संस्थाओं के मध्य समन्वय की कमी भी एक प्रमुख चुनौती के रूप में सामने आती है। जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विभाग अनेक स्तरों पर कार्यरत हैं, किंतु इनके प्रयासों में अपेक्षित एकरूपता एवं सहयोग का अभाव देखा जाता है। परिणामस्वरूप, उपलब्ध संसाधनों एवं कार्यक्रमों की प्रभावशीलता प्रभावित होती है।

संभावनाएँ एवं नीतिगत उपाय–

जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास की चुनौतियों के साथ–साथ अनेक सकारात्मक संभावनाएँ भी विद्यमान हैं। यदि उपलब्ध संसाधनों, संस्थागत व्यवस्थाओं एवं नीतिगत पहलों का समुचित उपयोग किया जाए, तो इस क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन संभव है। इसके लिए बहु–आयामी एवं दीर्घकालिक रणनीतियों को अपनाना आवश्यक होगा। इस सन्दर्भ में प्रमुख बिन्दुएं निम्नलिखित हैं–

- सर्वप्रथम, जनसंख्या शिक्षा को विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में अधिक व्यवस्थित एवं अंतर्विषयक स्वरूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसे केवल एक पूरक विषय के रूप में न देखकर जीवन–कौशल एवं नागरिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाना अधिक उपयोगी होगा। इससे विद्यार्थियों में जनसंख्या, पर्यावरण एवं विकास से संबंधित प्रश्नों के प्रति व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकेगा।
- द्वितीय, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को नवीन जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों, सतत विकास लक्ष्यों तथा शिक्षण की सहभागितापूर्ण विधियों से परिचित कराया जाना चाहिए। इससे वे विषय को अधिक प्रभावी एवं संदर्भपरक ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे। प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता जनसंख्या शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विस्तार की आधारशिला सिद्ध हो सकती है।
- तृतीय, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग जन–जागरूकता के लिए व्यापक स्तर पर किया जा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई–सामग्री, सामुदायिक रेडियो एवं सामाजिक मीडिया के माध्यम से विभिन्न आयु वर्गों तक सरल एवं विश्वसनीय जानकारी पहुँचाई जा सकती है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से युवाओं के मध्य जागरूकता विकसित करने में सहायक हो सकता है।
- चतुर्थ, स्थानीय समुदायों एवं नागरिक समाज की सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पंचायत संस्थाएँ, स्वयंसेवी संगठन एवं सामुदायिक समूह स्थानीय आवश्यकताओं एवं समस्याओं को बेहतर ढंग से समझते हैं। इनके सहयोग से जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी एवं सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य बनाया जा सकता है। इससे नीतियों एवं व्यवहार के मध्य विद्यमान अंतर को कम करने में सहायता मिलेगी।
- पंचम, महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण को विशेष प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए। अनेक अध्ययनों से यह स्थापित हुआ है कि महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं निर्णयात्मक भागीदारी का प्रत्यक्ष संबंध स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं सामाजिक विकास से होता है। अतः महिला–केंद्रित नीतियाँ सतत विकास की प्रक्रिया को अधिक समावेशी एवं प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।
- षष्ठम, सतत विकास लक्ष्यों के स्थानीयकरण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ भिन्न हैंय इसलिए नीतियों का निर्माण स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना अधिक उपयुक्त होगा। इससे विकास कार्यक्रमों की प्रासंगिकता एवं प्रभावशीलता दोनों में वृद्धि होगी।

अंत में, नीति–निर्माण एवं अनुसंधान के मध्य सुदृढ़ संबंध स्थापित करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों एवं सरकारी एजेंसियों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देकर साक्ष्य–आधारित नीतियों का निर्माण किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास के क्षेत्र में दीर्घकालिक एवं स्थायी परिणाम प्राप्त करने में सहायक होगा।

निष्कर्ष–

जनसंख्या शिक्षा एवं सतत विकास समकालीन समाज की दो ऐसी अवधारणाएँ हैं, जिनकी प्रासंगिकता निरंतर बढ़ती जा रही है। दोनों का मूल उद्देश्य मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार, सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास तथा संसाधनों के संतुलित उपयोग को सुनिश्चित करना है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों एवं समुदायों को ऐसे ज्ञान एवं दृष्टिकोण से सुसज्जित करती है, जो उन्हें विकास संबंधी निर्णयों के प्रति अधिक संवेदनशील एवं उत्तरदायी बनाते हैं। अध्ययन के विभिन्न आयामों से यह भी परिलक्षित होता है कि सतत विकास की सफलता केवल आर्थिक प्रगति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसके लिए सामाजिक समावेशन, पर्यावरणीय संरक्षण एवं नागरिक सहभागिता भी समान रूप से आवश्यक हैं। जनसंख्या शिक्षा इन सभी तत्वों के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करती है और समाज को दीर्घकालिक विकास की दिशा में अग्रसर करने की क्षमता रखती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में अनेक नीतिगत एवं संस्थागत प्रयासों ने सकारात्मक आधार तैयार किया है, किंतु इनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सतत प्रयासों की आवश्यकता बनी हुई है। शिक्षा, प्रौद्योगिकी, सामुदायिक सहभागिता एवं अनुसंधान के समन्वित उपयोग के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा को अधिक व्यापक एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इसी दिशा में किए गए प्रयास न केवल सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति को गति प्रदान करेंगे, बल्कि एक अधिक न्यायपूर्ण, संतुलित एवं उत्तरदायी समाज के निर्माण में भी योगदान देंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

Brundtland, G. H. (1987) Our Common Future, Oxford University Press.

United Nations (2015) Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development.

UNESCO (1978) Population Education Programme, Paris: UNESCO.

United Nations Population Fund (UNFPA) (2024) State of World Population Report.

Government of India (2020) National Education Policy 2020, Ministry of Education.

Ministry of Health and Family Welfare (2021) National Family Health Survey (NFHS-5).

World Bank (2024) World Development Report.

United Nations Development Programme (UNDP) (2024) Human Development Report.

Census of India (2011) Primary Census Abstract.

Ministry of Environment, Forest and Climate Change (2023) Annual Report.

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. (2023) Global Education Monitoring Report.